Think IAS...

The Vision

Think Drishti

झारखंड लोक सेवा आयोग (JPSC)

झारखंड

राज्य विशेष

भाग-1

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

Code: JHPM10

झारखंड लोक सेवा आयोग (JPSC)

झारखंड

(राज्य विशेष)

भाग-1

दृष्टि The Vision

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009

दूरभाष : 8750187501, 011-47532596

टोल फ्री : 1800-121-6260

Web : www.drishtiIAS.com

E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को "like" करें

www.facebook.com/drishtithevisionfoundation

www.twitter.com/drishtiias

JPSC DLP

विषय सूची (Contents)

1.	**झारखंड : सामान्य परिचय**	**5–12**
2.	**झारखंड का इतिहास**	**13–34**
	2.1 पुरातात्त्विक स्रोत	13
	2.2 साहित्यिक स्रोत	14
	2.3 झारखंड का प्राचीन इतिहास	14
	2.4 झारखंड का मध्यकालीन इतिहास	19
	2.5 स्वतंत्रता संग्राम	28
3.	**झारखंड का आंदोलन/विद्रोह**	**35–48**
4.	**झारखंड : भौगोलिक अवस्थिति एवं भौतिक संरचना**	**49–54**
	4.1 झारखंड की भौगोलिक अवस्थिति	49
	4.2 झारखंड की भूगर्भिक संरचना	49
	4.3 झारखंड की भू-आकृतियाँ	52
5.	**झारखंड : जलवायु एवं मृदा**	**55–64**
	5.1 झारखंड की जलवायु	55
	5.2 झारखंड के जलवायु क्षेत्र	56
	5.3 झारखंड की मृदा	60
6.	**झारखंड : अपवाह तंत्र एवं सिंचाई**	**65–72**
	6.1 अपवाह तंत्र	65
	6.2 झारखंड में सिंचाई	68
	6.3 झारखंड की प्रमुख बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजनाएँ	69

7. झारखंड : वन एवं वन्यजीव	**73–86**
7.1 वनों का भौगोलिक क्षेत्र	73
7.2 वनों का भौगोलिक वर्गीकरण	74
7.3 वन संपदा	76
7.4 वन नीति	79
8. झारखंड: खनिज संसाधन	**87–95**
8.1 खनिज संसाधनों के प्रकार	87
8.2 खनिज आधारित उद्योग	91
9. औद्योगिक विकास, नीति, विस्थापन एवं पुनर्वास	**96–140**
9.1 झारखंड में औद्योगिक विकास	96
9.2 झारखंड में औद्योगिक नीति एवं अन्य नीतियाँ	97
9.3 झारखंड औद्योगिक नीति-2012	98
10. झारखंड : जनगणना एंव नगरीकरण	**141–155**
10.1 राज्य की जनसंख्या	141
10.2 नगरीकरण	152

अध्याय
1

झारखंड : सामान्य परिचय
(Jharkhand : General Introduction)

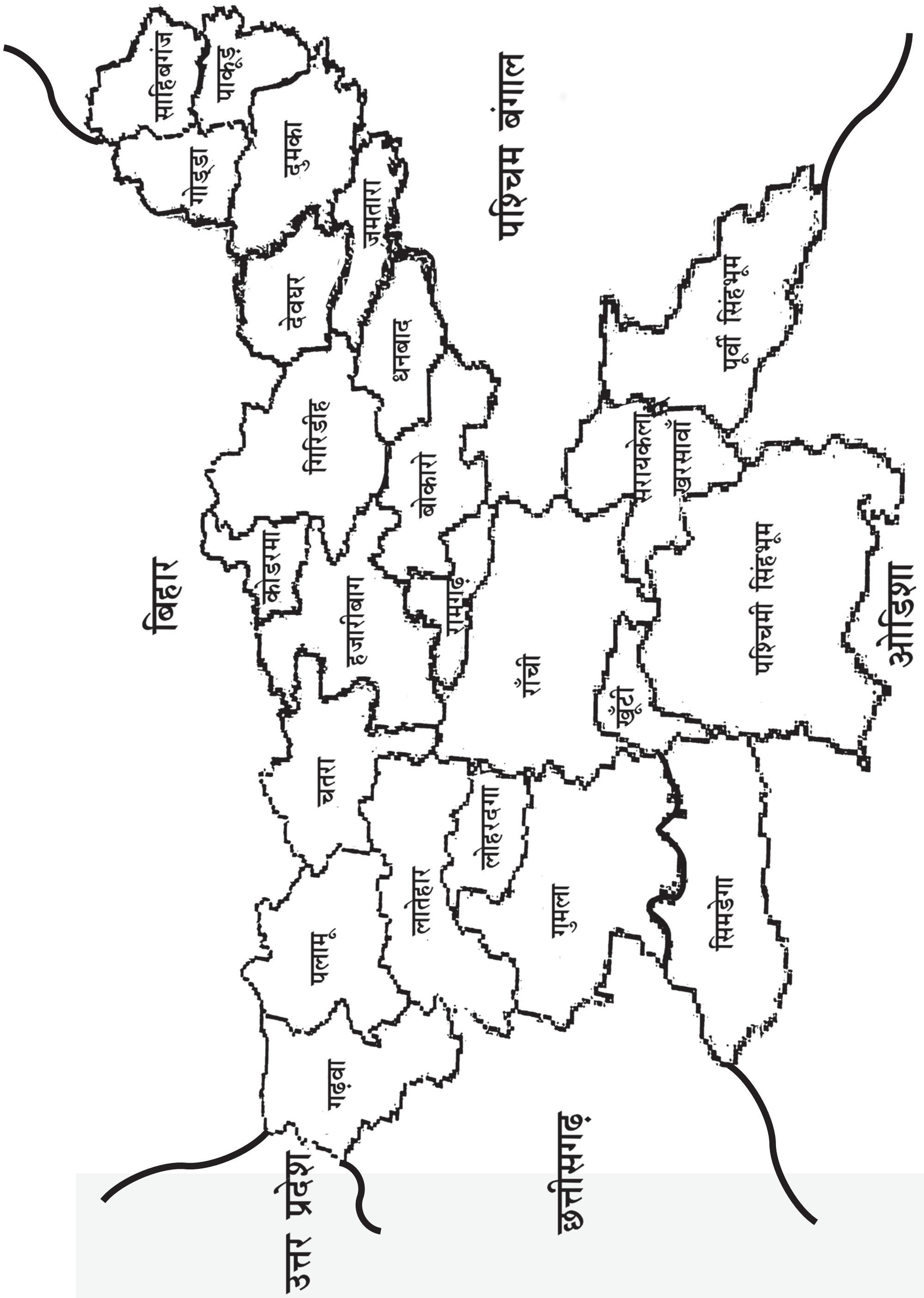

अध्याय
2

झारखंड का इतिहास (History of Jharkhand)

प्राचीनकाल से लेकर वर्तमान काल तक झारखंड का इतिहास एवं संस्कृति का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है, महाभारत के 'दिग्विजय पर्व' में झारखंड को 'पशुभूमि' और एक अन्य नाम 'पूंडरीक' देश से भी संबोधित किया गया है, झारखंड के इतिहास व संस्कृति के निर्माण में जनजातीय समाज का अमूल्य योगदान रहा है, यद्यपि झारखंड के इतिहास से यह पता चलता है कि अभी भी अनेक जानकारियाँ या तथ्य उद्घाटित होना बाकी है, प्रागैतिहासिक काल से आधुनिक काल तक झारखंड की मानवीय संस्कृति और सभ्यता के विकास से संबंधित प्रागैतिहासिक स्रोतों की अधिकता पाई जाती है, झारखंड के संदर्भ में प्रस्तुत पुरातात्त्विक और साहित्यिक दोनों प्रकार के स्रोत का विवरण उपलब्ध है।

2.1 पुरातात्त्विक स्रोत *(Archeological Source)*

पुरातात्त्विक स्रोत का तात्पर्य झारखंड क्षेत्र में वर्तमान से लगभग 1 लाख वर्ष पूर्व पुरापाषाणकालीन साक्ष्यों के रूप में उपकरणों की प्राप्ति से लगाया जाता है। झारखंड क्षेत्र में पुरातात्त्विक उपकरण में विभिन्न प्रकार के ताम्र औज़ार, आभूषण, पत्थर के औज़ार, सेल्ट, सिक्के, मूर्तियाँ आदि मिले हैं। इन उपकरणों की प्राप्ति झारखंड के विभिन्न ज़िलों से हुई है। पुरातात्त्विक स्रोत को पूर्व पाषाण युग, मध्य पाषाण युग, एवं नव पाषाण युग के अनुसार विभाजित गया है-

पुरापाषाणकालीन स्थान *(Paleolithic Location)*

- 1865 में बोकारो से हरा अभ्रकीय-स्फटिक हस्तकुठार प्राप्त किया गया।
- हज़ारीबाग ज़िले में विभिन्न पुरातात्त्विक स्थलों जिनमें बाँदा क्षेत्र से हस्तकुठार, रामगढ़ में पुरापाषाण काल के औज़ार, करहरबरी और बरगुंडा में तांबा निर्मित वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं।
- पश्चिमी सिंहभूम क्षेत्र में अमाईनगर, चाईबासा, धोरांगी, दहिगाड़ा, गोपालपुर, गालूडीह, मुरगॉन हाता, नरसिंहगढ़ आदि में पुरापाषाणकालीन सामग्रियाँ प्राप्त हुई हैं।
- देवहार में कर्णकोलाजोर नदी सतह से निम्न पाषाणयुगीन औज़ार प्राप्त हुए हैं।
- दुमका के पहाड़पुर में गोमई नदी के दक्षिणी किनारे से स्फटिक के धारदार औज़ार प्राप्त हुए हैं।
- इसके अलावा राँची, पूर्वी सिंहभूम आदि स्थानों से पुरापाषाणकालीन तथ्य मिले हैं।

मध्यपाषाणकालीन स्थान *(Middle Paleolithic Location)*

- मध्यपाषाणकालीन संस्कृति 9000 ई. पूर्व से 4000 ई. पूर्व के मध्य थी।
- पलामू के अंधारी पहाड़, भवनाथपुर, भागाडीह-रमना, चोपाली पहाड़, धाजवा पहाड़, चालवा, कोरवा, धोरमा, हरदी आदि क्षेत्रों से मध्यपाषाणकालीन साक्ष्य एकत्रित किये गए हैं।
- धनबाद के गंजापहाड़ घाटी क्षेत्र में इस काल के अनेक स्थान प्राप्त हुए हैं।
- पूर्वी सिंहभूम के घाटशिला, जगन्नाथपुर, बारदुगुआ, हिरजीहाती आदि क्षेत्रों में अनेक मध्यपाषाणकालीन साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
- दुमका के विभिन्न क्षेत्रों आमरापाड़ा, भेलाडीह, बुधुडीह, चौधरीडीह, डाबर, डुमर, सुटिया, लिदापिसा पहाड़ी आदि क्षेत्रों में मध्यपाषाणकालीन साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
- राँची के चैनपुर, बामला, विधाटोली, बिरता, डामरी, डारगामा गुराम, हारिम, जामटोली, कुचाझारिया आदि क्षेत्रों में ऐसे अनेक साक्ष्य प्राप्त हुए हैं, जो मध्यपाषाणकालीन हैं।
- पश्चिम सिंहभूम में चाईबासा, अंधारी, भोलादीह, चाकुलिया, चांडिल, चेवरा, डोबो, दोरान, गाराडी, सोंत, मुरगनहाता आदि क्षेत्रों में मध्यपाषाणकालीन साक्ष्यों की प्राप्ति हुई है।

- हज़ारीबाग के उपायुक्त कार्यालय पर 14 अगस्त को यूनियन जैक को उतारकर राष्ट्रीय झंडा फहराया गया।
- जपला मज़दूर संघ के राष्ट्रीय सचिव मिथिलेश कुमार सिन्हा की प्रेरणा से जपला फैक्ट्री के मज़दूरों ने हड़ताल रखी। 11 अगस्त को पलामू में एक जूलुस निकाला गया।
- 11 अगस्त को देवघर में पंडित विनोदानंद झा के नेतृत्व में जूलुस निकाला गया। देवघर अनुमंडल के संरक्षण में ही समानांतर सरकार की स्थापना की गई।
- छोटानागपुर क्षेत्र में 1942 के आंदोलन के दौरान 373 व्यक्ति नज़रबंद और 13879 व्यक्ति गिरफ्तार किये गए। साथ ही 538 व्यक्ति मारे गए थे।
- राष्ट्रीय स्तर के कई नेताओं को हज़ारीबाग जेल में लाकर रखा गया था। इस जेल से जयप्रकाश नारायण 9 नवंबर, 1942 की रात अपने पाँच साथियों रामानंद मिश्र, योगेंद्र शुक्ल आदि के साथ भागने में सफल हो गए।
- गोड्डा कचहरी पर राष्ट्रीय झंडा 13 अगस्त को फहराया गया। संथाल परगना में सबसे सक्रिय आंदोलनकारी प्रफुल्लचंद्र पटनायक थे। पहाड़ियाँ लोगों का नेतृत्व इन्होंने किया। इनके आंदोलन का मुख्यालय डांगपारा था।
- इस घटना के उपरांत रामनारायण सिंह, कृष्णवल्लभ सहाय तथा सुखलाल सिंह को हटाकर भागलपुर जेल में ले जाया गया।
- प्रफुल्लचंद्र पटनायक और उनके तीन साथियों पर ब्रिटिश हुकुमत ने ₹200 का इनाम घोषित किया।
- संभवत: 22 अगस्त को राँची से वाचस्पति त्रिपाठी की गिरफ्तारी इस आंदोलन की अंतिम गिरफ्तारी थी।
- 30 सितंबर को आंदोलनकारियों द्वारा मान बाज़ार थाने पर आक्रमण किया गया। इस आंदोलन में चूनाराम महतो एवं गिरीशलाल महतो की मृत्यु पुलिस की गोली से हो गई जबकि गोविंद महतो एवं हेम महतो घायल हो गए।
- रामानंद तिवारी के नेतृत्व में जमशेदपुर में सिपाहियों ने विद्रोह किया, जिन्हें गिरफ्तार कर हज़ारीबाग जेल लाया गया।
- 1947 में पूरा देश स्वतंत्र हो गया।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण तथ्य

- विष्णुपुराण में झारखंड को मुंड एवं भगवत पुराण में 'किक्कट' प्रदेश कहा गया है।
- बहारिस्तान ए गैगो के लेखक मिर्जा नाथन ने इस क्षेत्र को 'कुकरा देश' कहा है।
- रगुंडा और करहरबरी से तांबा से निर्मित सामग्री की प्राप्ति हुई है।
- पुरातात्त्विक खोजों में झारखंड में अनेक असुर क्षेत्र मिले हैं, जहाँ उनके मृतकों के कब्र भी पाए गए हैं।
- हज़ारीबाग के बारहगंडा में तांबों के खानों के अवशेष मिले हैं।
- झारखंड में लौह युग का प्रारंभ 2000 से 1000 ई.पू. के मध्य होता है।
- झारखंड में असुरों के निवास के चिह्न के साथ लौह अवशेष पाए गए हैं।
- नवपाषाण युग मुख्य रूप से बाह्य उत्पादक युग के रूप में जाना जाता है।
- चाईबासा में नवपाषाण काल के रोरो नदी के किनारे अनेक हथियार मिले हैं, जिनमें चाकुओं की प्रधानता है।
- ऋग्वेद में झारखंड को 'ककिटानाम दशोअनार्य' के नाम से जाना जाता है।
- सिंहभूम के खबर जनजाति की चर्चा ऐतरेय ब्राह्मण में है।
- बिरसा मुंडा द्वारा झारखंड में जनजाति राज्य निर्माण की प्रक्रिया प्रारंभ की गई।
- सुतिया पाहन को सुडाओं का शासक चुना गया।

- नए राज्य का नाम सुतिया पाहन ने सुतिया नागखंड रखा।
- मगध सम्राट जरासंध मुंडाओं का मित्र था।
- मुंडा शासन अंतिम शासक मदरा मुंडा था।
- संसार में सर्वाधिक लंबे समय तक शासन करने वालों में नागवंशी राजा गिने-चुने राजवंशों में हैं।
- सुतियांबे में सूर्य मंदिर का निर्माण फणिमुकुट राय ने करवाया था।
- नागवंश संस्थापक फणिमुकुट राय का विवाह पंचेत के राजघराने में हुआ था।
- भीमकर्ण प्रथम ने 'राय' के स्थान पर 'कर्ण' की उपाधि धारण की।
- भीमकर्ण ने चुटिया के स्थान पर खुखरा को अपनी राजधानी बनाया।
- नागवंश की अंतिम राजधानी रातूगढ़ थी।
- रक्सेलों की एक शाखा देवगन में जबकि दूसरी शाखा कुडेलवा में स्थापित हुई।
- 'वंश प्रभा लेखन' सिंह वंश का पारिवारिक ऐतिहासिक ग्रंथ है।
- बाबर एवं हुमायूँ के शासन के दौरान झारखंड मुगल विरोधी अफगानों का आश्रय स्थली बन गया था।
- शेरशाह ने बंगाल पर अधिकार करने के लिये तेलियागढ़ी (राजमहल की पहाड़ी के बीच स्थित) रास्ते का प्रयोग किया।
- अकबर ने खुखरा विजय के लिये 1585 में शाहबाज खाँ को भेजा था। बुखरा का राजा मधुकर शाह था।
- 1590-91 में मिदनापुर जाते हुए राजा मान सिंह ने मानभूम रास्ते का प्रयोग किया।
- आइन-ए-अकबरी के अनुसार हज़ारीबाग को 'छै' और 'चंपा' परगने बिहार का सूबा था।
- अकबर के काल में मुगलों का संपर्क सिंह भूम से स्थापित हुआ।
- तुजुक-ए-जहाँगीरी में छोटानागपुर के क्षेत्र से सोने की प्राप्ति का उल्लेख है।
- पंचेत के ज़मींदार बीर हमीर ने मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली।
- औरंगजेब का नागवंश तथा चेरो वंश के शासकों से निकट संबंध था।
- पाल शासकों के समय झारखंड में बौद्ध धर्म का व्रजयान शाखा का प्रभाव बढ़ रहा था।
- 1768 ई. में जगन्नाथ ने अंग्रेज़ों के विरुद्ध विद्रोह किया।
- 1820 ई. मेजर रफसेज ने कोल्हान क्षेत्र में प्रवेश किया और 'रोरो' नदी के किनारे हो और अंग्रेज़ी सेना के बीच लड़ाई हुई।
- 1837 ई. में कोल्हान क्षेत्र को प्रशासकीय इकाई बनाकर एक अंग्रेज़ अधिकारी के अधीन कर दिया गया।
- पलामू अभियान में कैप्टन कैसक की मदद पलामू के जयमंगला सिंह, कुंडा के धीरज नारायण तथा सिरिस-कुतुबा के नारायण सिंह ने मदद की।
- दर्पनाथ शाह ने स्वयं सतबरबा जाफर 1771 ई. में अंग्रेज़ों की अधीनता स्वीकार की।
- 1676 ई. में अंग्रेज़ों ने संथाल परगना में एक व्यापारिक कोठी की स्थापना की।
- 1742 ई. में राजमहल क्षेत्र पर मराठों का कब्जा हुआ।
- राजा तेज सिंह के समय ईचाक रामगढ़ की राजधानी बना।
- 1769 ई. में भूमिज ने अंग्रेज़ों के विरुद्ध विद्रोह किया।
- चतरा में बौद्धकालीन भद्रकाली मंदिर का निर्माण किया गया।
- औरंगजेब झारखंड से सिंहभूम को अपने साम्राज्य में सम्मिलित नहीं कर सका।
- मलिक मोहम्मद जायसी के पद्मावत में झारखंड शब्द का उल्लेख मिलता है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. नागवंशी शासक राजा दुर्जनशाल ने 1628 में मुगल सम्राट जहाँगीर को वार्षिक कर देना स्वीकार किया था। वार्षिक कर की राशि थी- **6th JPSC (Pre)**
   (a) ₹7,000 (b) ₹9,000
   (c) ₹6,000 (d) ₹5,000
2. 1857 की क्रांति में संपूर्ण सिंहभूम क्षेत्र में क्रांतिकारियों के प्रमुख नेता कौन थे? **5th JPSC (Pre)**
   (a) राजा दुर्जनशाल (b) राजा अर्जुन सिंह
   (c) ठाकुर विश्वनाथ शाही (d) टिकैत उमराँव सिंह
3. टाना भगत आंदोलन की शुरुआत कब हुई थी? **5th JPSC (Pre)**
   (a) अप्रैल, 1912 (b) अप्रैल, 1913
   (c) अप्रैल, 1914 (d) अप्रैल, 1915
4. 'बिरहोर' का शाब्दिक अर्थ क्या है? **5th JPSC (Pre)**
   (a) जंगल का आदमी (b) प्रकृति-प्रेमी आदमी
   (c) पवित्र आदमी (d) आम-आदमी
5. छोटानागपुर का क्षेत्र ब्रिटिश शासन के अंतर्गत कब आया था? **5th JPSC (Pre)**
   (a) 1764 (b) 1765
   (c) 1772 (d) 1773
6. छोटानागपुर में विल्किंसन कानून कब लागू हुआ? **5th JPSC (Pre)**
   (a) 1834 (b) 1835
   (c) 1836 (d) 1837
7. महाभारत में झारखंड को किस नाम से जाना जाता है? **1st JPSC (Pre)**
   (a) पौड्रिक (b) पुंडरीक
   (c) पिंड्रिक (d) पिंडली
8. संथाल आंदोलन का नेता कौन था? **1st JPSC (Pre)**
   (a) बिरसा मुंडा (b) सिद्ध कान्हू
   (c) जतरा भगत (d) तरूत सिंह
9. संथाल विद्रोह कब हुआ था? **1st JPSC (Pre)**
   (a) 1855-56 में (b) 1957-58 में
   (c) 1899-1900 में (d) इनमें से कोई नहीं
10. निम्नांकित में से कौन मुंडा-विद्रोह का नेता था? **1st JPSC (Pre)**
    (a) सिद्ध-कान्हू (b) जतरा भगत
    (c) बिरसा मुंडा (d) तिरूत सिंह
11. झारखंड की अधिकतर जनजातियाँ किस प्रजाति की हैं? **1st JPSC (Pre)**
    (a) प्रोटो-ऑस्ट्रोलॉयड
    (b) आस्ट्रोलॉयड
    (c) मंगोलॉयड
    (d) इनमें से कोई नहीं
12. झारखंड की सबसे बड़ी जनजाति है- **1st JPSC (Pre)**
    (a) हो (b) उराँव
    (c) मुंडा (d) संथाल
13. संथालों के सामुदायिक व्यवस्था में माँझी का उपप्रधान कौन था?
    (a) प्रधान (b) मुस्तंजीर
    (c) पारानिक (d) गौरतेत
14. मुंडा मानकी व्यवस्था को किस अंग्रेज़ पदाधिकारी ने मंजूरी प्रदान किया था?
    (a) थोमासन (b) कारलाएल
    (c) क्लीबलैंड (d) थोमस विल्किंसन

उत्तरमाला

1. (c) 2. (b) 3. (c) 4. (a) 5. (c) 6. (d) 7. (b) 8. (b) 9. (a) 10. (c)
11. (a) 12. (d) 13. (c) 14. (d)

दीर्घउत्तरीय प्रश्न

1. कोल विद्रोह के उत्तरदायी कारकों पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखें। **4th JPSC (Mains)**
2. संथाल विद्रोह का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिये। **2nd JPSC (Mains)**
3. राष्ट्रीय आंदोलन में बिरसा मुंडा के योगदान का मूल्यांकन कीजिये। **2nd JPSC (Mains)**

अध्याय
3

झारखंड का आंदोलन/विद्रोह (Movement/Revolt of Jharkhand)

कंपनी के द्वारा 1767 ई. में झारखंड में प्रवेश करते ही असंतोष व्याप्त हो गया। इस समय जहाँ जनजातीय जीवन शैली में अनेक परिवर्तन देखने को मिले तो वहीं प्राकृतिक अकालों और आपदाओं ने इनके सामने बड़े भीषण संकट पैदा कर दिये। इसके बावजूद स्थानीय जमींदार, मुगल, मराठों द्वारा जनजातियों का शोषण व दमन जारी रखने की प्रवृत्ति ने इन्हें विद्रोही बना दिया। इसके साथ ही जनजातियों को अपनी संस्कृति, अधिकारों एवं स्वतंत्रता में हस्तक्षेप पसंद नहीं आया। 17वीं शताब्दी के अंत तक जनजाति विद्रोह दिखाई देने लगी थी क्योंकि अंग्रेज़ों के आगमन से जनजातीय लोगों की पहचान व स्वतंत्रता खतरे में पड़ती दिखाई देने लगी थी। अंग्रेज़ों का व्यवहार जनजातियों के प्रति भेदभावपूर्ण था तथा ये एक वर्ग विशेष के हित में इनको शोषण का शिकार बनाते थे। अंग्रेज़ों के समय झारखंड क्षेत्र में कुल 13 विद्रोह हुए जिनमें से कुछ प्रमुख विद्रोहों का उल्लेख किया गया है।

तमाड़ विद्रोह

- छोटानागपुर क्षेत्र में अंग्रेज़ों द्वारा 1771 ई. में अधिकार जमा लिया गया था। जमींदारों और राजाओं को अंग्रेज़ों का समर्थन प्राप्त था जिससे यहाँ शोषण प्रारंभ हो गए थे।
- तमाड़ विद्रोह का मुख्य कारण जमीदारों द्वारा किसानों की ज़मीनें हड़पना, कंपनी अधिकारियों, जमीदारों एवं गैर आदिवासियों (दिकु) द्वारा उनका शोषण किया जाना था।
- उराँव जनजाति के लोगों ने इस शोषण के खिलाफ विद्रोह की आग भड़का दी।
- 1789 में जनजाति लोगों ने अपने विद्रोह का परिचय दिया और जमींदारों पर टूट पड़े।
- ठाकूर भोलानाथ सिंह के नेतृत्व में तमाड़ विद्रोह प्रसिद्ध हुआ। इस विद्रोह से भयभीत होकर जमींदारों ने अंग्रेज़ों से सहायता की अपील की।
- अंग्रेजों ने इस विद्रोह को सफलतापूर्वक दबा दिया। 1809 ई. में अंग्रेज़ों ने छोटानागपुर में शांति की स्थापना के लिये पुलिस बल की व्यवस्था की। जब इनकी भूमि पर पुनः अधिकार जमाए जाने लगा तो यह विद्रोह और भी व्यापक हो गया।

तिलका आंदोलन *(1783-1785)*

- तिलका मांझी के नेतृत्व में 1783 में इस विद्रोह की शुरुआत हुई। इस आंदोलन का उद्‌देश्य अंग्रेजों से इस क्षेत्र को मुक्त करना और आदिवासी स्वायत्तता की रक्षा करना था।
- इस आंदोलन में जनजागरूकता गाँव-गाँव सूखआ पत्ता घुमाकर कर किया जाता था। तिलका मांझी अंग्रेज़ी खजाना लूटकर गरीबों में बाँटा करते थे।
- तिलका मांझी के तीरों के हमले से अंग्रेज सेनानायक अगस्टीन क्लीवलैंड मारा गया। इन्होंने सुल्तानगंज की पहाड़ियों से छापामार युद्ध का नेतृत्व किया।
- वर्तमान में बाबा तिलका मांझी चौक जो भागलपुर में स्थित है, जहाँ बरगद के पेड़ से लटकाकर तिलका मांझी को फाँसी दे दी गई थी।

चुआड़ विद्रोह *(1798)*

- इस विद्रोह की शुरुआत अंग्रेज़ों द्वारा लगान बढ़ाए जाने के कारण उपजे आर्थिक असंतोष के चलते हुआ। इस विद्रोह का आरंभ वीरभूम के जंगल और घाटशिला के चुआर एवं उड़ीसा के पाइक सरदारों द्वारा किया गया।
- मानभूम, बड़ाभूम और पंचेत राज्य में हुए चुआर विद्रोह का नेतृत्व दुर्जन सिंह द्वारा किया गया जबकि चुआर विद्रोह के प्रमुख नेता सुबल सिंह, जगन्नाथ पातर और श्याम गंजम थे।

अध्याय
4

झारखंड : भौगोलिक अवस्थिति एवं भौतिक संरचना (Jharkhand: Geographical Location and Physical Structure)

4.1 झारखंड की भौगोलिक अवस्थिति *(Geographical Location of Jharkhand)*

- 15 नवंबर 2000 ई. को संयुक्त बिहार के 18 ज़िलों को मिलाकर झारखंड राज्य का गठन किया गया।
- वर्तमान के झारखंड राज्य 24 ज़िलों से मिलकर बना है। जिसका विस्तार उत्तरी गोलार्द्ध में 21º 58' से 25º 18' उत्तरी अक्षांश के बीच स्थित है जबकि झारखंड का देशांतरीय विस्तार 83º 22' पूर्व से 87º 57' उत्तरी अक्षांश पूर्व के बीच है।
- झारखंड राज्य का कुल क्षेत्रफल 79,714 वर्ग किलोमीटर है। जिसमें ग्रामीण क्षेत्रफल 77,922 वर्ग किलोमीटर और नगरीय क्षेत्रफल 1,792 वर्ग किलोमीटर है।
- देश के कुल क्षेत्रफल में झारखंड राज्य का हिस्सा 2.42 प्रतिशत है, जबकि क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत के राज्यों में 15 वें स्थान पर है।
- झारखंड के उत्तर में बिहार राज्य अवस्थित है, इसके पूर्व भाग में पश्चिम बंगाल, दक्षिण भाग में ओडिशा और पश्चिम भाग में छत्तीसगढ़ और उत्तर-पश्चिम में उत्तर प्रदेश झारखंड राज्य से सीमा साझा करता है।
- झारखंड राज्य का विस्तार उत्तर से दक्षिण की ओर 380 किलोमीटर है जबकि पूर्व से पश्चिम की ओर 463 किलोमीटर है।

अन्य राज्यों से सटे झारखंड के ज़िले

राज्य	दिशा	संख्या	ज़िला
बिहार	उत्तर	(10)	साहिबंगज, गोड्डा, दुमका, देवघर, गिरिडीह, कोडरमा, हजारीबाग, चतरा, पलामू, गढ़वा
उत्तर प्रदेश	उत्तर पश्चिम	(1)	गढ़वा
छत्तीसगढ़	पश्चिम	(4)	गढ़वा, लातेहार, गुमला, सिमडेगा
ओडिशा	दक्षिण	(4)	सिमडेगा, पश्चिमी सिंहभूम, सरायकेला-खोरसावां, पूर्वी सिंहभूम
पश्चिम बंगाल	पूर्व	(10)	पूर्वी सिंहभूम, सराय केला-खरसावां, राँची, रामगढ़, बोकारो, धनबाद, जामतारा, दुमका, पाकुड़, साहिबगंज

4.2 झारखंड की भूगर्भिक संरचना *(Geological Stracture of Jharkhand)*

- झारखंड की भूगर्भिक संरचना काफी जटिल है, यहाँ प्रारंभिक काल से लेकर चतुर्थक काल तक अनेक भूगर्भिक हलचले एवं परिवर्तन देखने को मिलते है।

अध्याय
5

झारखंड : जलवायु एवं मृदा (Jharkhand: Climate and Soil)

झारखंड की भौगोलिक अवस्थिति $23\frac{1^\circ}{2}$ उत्तरी अक्षांश अर्थात् कर्क रेखा पर है। यह झारखंड को दो बराबर भागों में बाँटती है, जिस आधार पर झारखंड की जलवायु को उष्ण कटिबंधीय मानसूनी जलवायु प्रदेश में रखा गया है। झारखंड में कर्क रेखा नेटरहाट, किस्को, ओरमांझी, गोला, मुरहुलसुदी, गोपालपुर, पोखन्ना गोसाईडीह, झालबरद, पालकुदरी होते हुए बंगाल की ओर जाती है।

5.1 झारखंड की जलवायु *(Climate of Jharkhand)*

झारखंड की जलवायु को विभिन्न आधारों जैसे-

- मौसम (ऋतुओं) के आधार पर।
- तापमान, वर्षा एवं आर्द्रता के आधार पर। निर्धारित की जाती है।

मौसम (ऋतुओं) तथा वर्षा, तापमान तथा आर्द्रता की स्थिति के आधार पर झारखंड की जलवायु को मूलतः तीन भागों में विभाजित किया जाता है। जो मुख्यतः शीत ऋतु, ग्रीष्म ऋतु तथा वर्षा ऋतु हैं। जिन्हें विस्तृत रूप में निम्नलिखित रूप में देखा जा सकता है।

शीत ऋतु *(Winters Season)*

इस ऋतु का आरंभ वर्षा ऋतु की समाप्ति के पश्चात् होता है। यह ऋतु नवंबर माह से प्रारंभ होकर फरवरी माह तक होती है इस समय सूर्य का दक्षिणायन प्रारंभ हो जाता है। जिसकी वजह से वायुदाब पेटियों का भी दक्षिणी गोलार्द्ध की ओर खिसकाव होता है। जिसकी वजह से उत्तर-पश्चिमी भारत में उच्च दाब क्षेत्र का विकास होता है। इसी उच्च वायुदाब केंद्र से हवाएँ बाहर की ओर चलना प्रारंभ करती हैं जिससे यहाँ प्रतिचक्रवातीय दशाएँ उत्पन्न होती हैं। झारखंड भी इसी उच्च वायुदाब क्षेत्र से आवृत्त रहता है। इस समय हवाएँ उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूरब की ओर बहने लगती हैं किंतु उच्चावच में विषमता के फलस्वरूप इनका प्रभाव सीमित रहता है।

शीत ऋतु में सूर्य के दक्षिणायन के फलस्वरूप भारतीय उपमहाद्वीप में सूर्यातप की औसत मात्रा में कमी आती है। इस समय यहाँ का औसत तापमान 15°-20°C के बीच रहता है। यद्यपि स्थानीय कारक जैसे कि उच्चावच, भौतिक स्वरूप एवं वनस्पतियों की उपस्थिति को प्रभावित करते हैं। जिसके फलस्वरूप स्थानीय तापमान में भिन्नता होती है। झारखंड के पाट क्षेत्रों में औसत वार्षिक तापमान 25°C से कम है जबकि पलामू, गढ़वा, पूर्वी सिंहभूम, प. सिंहभूम, चतरा के उत्तरी भाग एवं संथाल परगना के पूर्वी भागों में औसत वार्षिक तापमान लगभग 26°C से अधिक पाया जाता है। शेष इलाकों में वार्षिक तापमान लगभग 23°C से 26°C के मध्य पाया जाता है।

झारखंड में सामान्यतः शीतऋतु, शेष भारत की भाँति शुष्क होती है। किंतु बंगाल की खाड़ी में इस समय बनने वाले उष्ण कटिबंधीय चक्रवात के प्रभाव में राज्य के पूर्वी भागों में वर्षा होती है। जो कि 180 मिमी. तक होती है। इस समय वाष्पीकरण की अनुपस्थिति एवं प्रतिचक्रवातीय दशा के कारण आर्द्रता न्यून होती है। जो कि नंवबर माह में 70-56 प्रतिशत के बीच में होती है। दिसंबर में 68-55 प्रतिशत, जनवरी में 51-75 प्रतिशत, जबकि फरवरी में यह 45-68 प्रतिशत तक होती है।

ग्रीष्म ऋतु *(Summer Season)*

मार्च माह की शुरुआत में ही झारखंड में भी शेष भारत की भाँति ग्रीष्म ऋतु का आरंभ होता है इस समय सूर्य के उत्तरायण का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देने लगता है। मार्च में झारखंड का औसत तापमान 29°C से 35°C तक बढ़ जाता है।

अध्याय
6

झारखंड : अपवाह तंत्र एवं सिंचाई (Jharkhand: Drainage System and Irrigation)

किसी भी भूभाग पर जल संसाधनों की उपलब्धता तथा अपवाह तंत्र के विकास में कई भू-भौतिक कारक उत्तरदायी होते हैं जिसमें वर्षा की मात्रा, ढाल, उच्चावच तथा भू-पृष्ठ की संरचना आदि महत्त्वपूर्ण हैं। झारखंड के भौतिक स्वरूप एवं उच्चावाच के अनुरूप ही झारखंड की नदियाँ भी प्रवाहित होती हैं। झारखंड के ढाल की दिशा के आधार पर ही झारखंड की नदियों को दो भागों में बाँटा गया है। जिसे क्रमशः उत्तर की ओर और दक्षिण-पूर्व की ओर प्रवाह प्रमुख है।

उत्तर की ओर प्रवाह से तात्पर्य गंगा नदी बेसिन की ओर जाने वाली नदियों से है जिसमें उत्तरी कोयल, कन्हर, फल्गु, चानन, लीलाजन, सकरी, मोहना, कियूल आदि प्रमुख हैं। दक्षिण की ओर प्रवाहित होने वाली नदियों में दक्षिणी कोयल, शंख, स्वर्णरेखा तथा कारो प्रमुख हैं। पूरब की ओर प्रवाहित होने वाली नदियों में बराकर, अजय, दामोदर, ब्राह्मणी, नोर, गुमानी तथा बांसलोई आदि प्रमुख हैं।

6.1 अपवाह तंत्र *(Drainage System)*

झारखंड की नदियों का उद्‌गम स्थानीय पहाड़ियों तथा पठारों से होता है। है। संथाल परगना की नदियाँ मूलतः राजमहल पहाड़ी से निकलती हैं, शेष नदियाँ लातेहार, राँची तथा हज़ारीबाग पठार से निकलती हैं। वस्तुतः झारखंड का क्षेत्र, सबसे प्राचीन भूभौतिक संरचनाओं में से है जिसके फलस्वरूप यहाँ की अधिकांश नदियाँ ढाल का अनुसरण करते हुए प्रवाहित होती हैं। अपने मार्ग में आगे बढ़ते हुए ये नदियाँ नतिलंब (Strike), जलप्रपात तथा विसर्प बनाती हैं। दामोदर तथा स्वर्णरेखा जैसी नदियों की अकारिकी का अध्ययन करने से प्रतीत होता है कि ये नदियाँ नवोन्मेषण (पुनर्योवन) की प्रक्रिया से गुज़री हैं जिसका प्रमुख उदाहरण दामोदर नदी पर निर्मित अध:कर्तित विसर्प और निक प्वांइट की मौजूदगी है।

झारखंड की अपवाह तंत्र को पाँच भागों में विभाजित किया गया है। जो कि निम्नलिखित हैं-

- उत्तरी अपवाह तंत्र।
- उत्तर-पश्चिमी अपवाह तंत्र।
- पूर्वी अपवाह तंत्र।
- दक्षिण-पूर्वी अपवाह तंत्र।
- दक्षिणी अपवाह तंत्र।

उत्तरी अपवाह तंत्र *(Northern Drainage System)*

इस अपवाह तंत्र की नदियाँ मुख्यतः बिहार राज्य से होती हुई गंगा नदी तंत्र में मिल जाती हैं जो कि अत्यधिक सीमित क्षेत्र में विकसित हुआ है। इसका विस्तार क्षेत्र उत्तरी चतरा, हज़ारीबाग, उत्तरी कोडरमा आदि ज़िलों में है। यहाँ कर्मनाशा, पुनपुन, फल्गू, सकरी, पंचाने तथा कियूल आदि नदियों का उद्‌गम हुआ है। वस्तुतः इन नदियों का क्षेत्र अत्यधिक सीमित है जो कि झारखंड हेतु अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं है।

उत्तर-पश्चिमी अपवाह तंत्र *(North-West Drainage System)*

यह अपवाह तंत्र पलामू प्रमंडल में विकसित हुआ है इसमें उत्तरी कोयल, कन्हर, औरंगा तथा अमानत नदी तंत्र का विकास हुआ है।

अध्याय
7

झारखंड : वन एवं वन्यजीव
(Jharkhand : Forest and Wildlife Sanctuary)

भारत के पूर्वी राज्य- झारखंड को जैव विविधता के संदर्भ में एक समृद्ध राज्य माना जाता है, जो अपने घने जंगलों, नदी, झरनों, धार्मिक स्थलों, लोक-कला, संस्कृति एवं आदिवासी जीवन-शैली हेतु बहुत अधिक प्रसिद्ध है। राज्य के जनजातीय के लोग जंगलों के सच्चे मित्र माने जाते हैं, जंगल न सिर्फ इनके जीवनयापन का एक बड़ा माध्यम है, बल्कि ये वन क्षेत्र इनसे गहराई से जुड़े हुए हैं। यहाँ पर वन्यजीवों के संरक्षण हेतु अनेक वन्यजीव अभयारण्य भी विद्यमान हैं, जिनकी प्राकृतिक सुंदरता देखते ही बनती है।

7.1 वनों का भौगोलिक क्षेत्र *(Geographical Area of Forests)*

प्राकृतिक वनस्पति की दृष्टि से झारखंड राज्य एक संपन्न राज्य है। यहाँ भारत के कुल वनों का लगभग 3.4% हिस्सा प्राप्त होता है। राज्य के कुल क्षेत्रफल 79,716 वर्ग किमी. के 23,605 वर्ग किमी. क्षेत्र पर जंगल अवस्थित है, जो राज्य के कुल क्षेत्रफल का 29.61% भाग है। भारत के कुल वन क्षेत्र का 3.4% भाग राज्य का वन क्षेत्र है, जबकि पूरे देश के कुल क्षेत्रफल का 2.42% झारखंड का क्षेत्रफल है। राष्ट्रीय वन नीति के अनुसार कुल क्षेत्रफल के कम-से-कम 33% भाग पर वनों का विस्तार होना चाहिये। वनों को वृद्धि, विकास और रख-रखाव के प्रशासनिक दृष्टिकोण से 3 भागों में विभाजित किया गया है-

वनों का प्रशासनिक वर्गीकरण

आरक्षित वन	संरक्षित वन	अवर्गीकृत वन
आरक्षित वन ऐसे वन होते हैं, जिनमें पशुओं को चराने तथा लकड़ी काटने की अनुमति नहीं होती, अर्थात् उन्हें सरकारी संरक्षण में रखा जाता है। राज्य में ऐसे संरक्षित वनों का क्षेत्रफल 4,387 वर्ग किमी. है, जो कुल वन क्षेत्र का 18.58% है। राज्य का सबसे बड़ा संरक्षित वन क्षेत्र कोल्हान एवं पोराहाट वन क्षेत्र हैं। राजमहल तथा पलामू क्षेत्र के वन भी इसी श्रेणी में आते हैं। इन वनों का सर्वाधिक क्षेत्रफल पश्चिम सिंहभूम ज़िले में है।	संरक्षित वन ऐसे वन होते हैं, जिनमें पशुओं को चराने तथा एक सीमा तक लकड़ी काटने की अनुमति सरकार के द्वारा प्रदान की जाती है। इन वनों का कुल क्षेत्रफल 19,185 वर्ग किमी. है, जो कुल वन क्षेत्र का 81.28% है। इसका सर्वाधिक क्षेत्रफल विस्तार हज़ारीबाग में है, तत्पश्चात् गढ़वा, पलामू, राँची तथा लातेहार का स्थान आता है।	अवर्गीकृत वनों के अंतर्गत पशुओं को चराने तथा लकड़ी काटने हेतु सरकार का कोई प्रतिबंध नहीं होता, लेकिन सरकार इसके लिये शुल्क लेती है। इन वनों का कुल क्षेत्रफल 33 वर्ग किमी. है जो कुल वन क्षेत्र का 0.14% है। राज्य में इस तरह के वन साहेबगंज, पश्चिमी सिंहभूम, दुमका, हज़ारीबाग, पलामू तथा गुमला में पाए जाते हैं।

वन रिपोर्ट 5 फरवरी 2019 के अनुसार झारखंड का रिकॉर्डेड वन क्षेत्र

रिकॉर्डेड वन क्षेत्र	क्षेत्रफल (वर्ग किमी.)	प्रतिशत
आरक्षित क्षेत्र	4,387.00	18.58
सुरक्षित क्षेत्र	19,185.00	81.28
अवर्गीकृत क्षेत्र	33.00	0.14
कुल	23,605.00	29.61

- रिकॉर्डेड वन क्षेत्र से तात्पर्य ऐसे क्षेत्र से है, जिसे राज्य सरकार वन क्षेत्र घोषित कर चुकी है, चाहे उस पर वन हो या न हो।

अध्याय
8

झारखंडः खनिज संसाधन (Jharkhand : Mineral Resources)

भारत अपनी विविधतापूर्ण भूगर्भिक संरचना के कारण विविध प्रकार के खनिज संसाधनों से संपन्न है। भारी मात्रा में बहुमूल्य खनिज पूर्व-पुराजीवी काल या प्री-पैलयोजोइक एज में उद्भीत हैं। ये खनिज मुख्यतः प्रायद्वीपीय भारत की आग्नेय तथा कायांतरित चट्टानों से संबद्ध हैं। किसी भी देश के खनिज संसाधन औद्योगिक विकास के लिए आवश्यक आधार प्रदान करते हैं। झारखंड की धरती सही अर्थों में 'रत्नगर्भा' है। झारखंड में बहुमूल्य खनिज संपदाओं के विपुल भंडार हैं। झारखंड की गणना विश्व के प्राचीनतम भूंखडों में की जाती है एवं प्राचीन भूखंड होने के कारण यहाँ विभिन्न प्रकार के खनिजों का विकास हुआ है। झारखंड खनिज संसाधन की दृष्टि से देश का सबसे समृद्ध राज्य है। यहाँ विभिन्न प्रकार के खनिज एक साथ एक ही स्थान पर प्राप्त होते हैं। इस कारण झारखंड को भारत के रूर क्षेत्र की भी संज्ञा प्राप्त है। भारतीय खनन ब्यूरो के अनुसार देश में पाए जाने वाले खनिजों के संचित भंडार का लगभग 30 से 35 प्रतिशत भाग झारखंड के पठारी भागों में भंडारित है। देश के खजिन संपदा के कुल उत्पादन का 40 प्रतिशत भाग झारखंड से ही प्राप्त होता है। भारत में झारखंड का खनिज भंडार की दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण स्थान है।

8.1 खनिज संसाधनों के प्रकार *(Types of Minerals Resources)*

रासायनिक एवं भौतिक गुणधर्मों के आधार पर खनिजों को धात्विक, अधात्विक और ऊर्जा खनिजों में विभाजित किया जा सकता है।

धात्विक खनिज *(Metallic Minerals)*

जिन खनिजों में धातु तत्त्व की प्रधानता होती है, उसे 'धात्विक खनिज' कहते हैं। दूसरे शब्दों में धातु के स्रोत धात्विक खनिज हैं। लौह अयस्क, मैंगनीज, क्रोमियम, ताँबा, बॉक्साइट, टंग्स्टन, सोना, चाँदी, जस्ता, टिन, निकेल आदि धात्विक खनिज श्रेणी में आते हैं। धात्विक खनिजों को लौह एवं अलौह धात्विक श्रेणी में भी विभाजित किया गया है। वे सभी प्रकार के खनिज, जिनमें लौह अंश समाहित होते हैं (जैसे लौह अयस्क), 'लौह धात्विक' और जिनमें लौह अंश नहीं पाया जाता है, वे 'अलौह धात्विक' खनिज की श्रेणी में आते हैं जैसे तांबा, बॉक्साइट इत्यादि। झारखंड में पाए जाने वाले लौह धात्विक खनिजों में लौह अयस्क, मैंगनीज और क्रोमाइट है तथा अलौह धातु के अंतर्गत तांबा, बॉक्साइट, टिन, सीसा, चांदी, सोना आदि प्रमुख हैं।

लौह अयस्क

झारखंड में लौह अयस्क के प्रचुर संसाधन हैं। लौह अयस्क सामान्यतः चार प्रकार का होता है। मैग्नेटाइट, हेमाटाइट, लिमोनाइट या सिडेराइट और लैटेराइट या लिग्नाइट। झारखंड की पहाड़ी शृंखलाओं में कुछ सबसे पुरानी लौह अयस्क की खदानें हैं। देश का 23 प्रतिशत लौह अयस्क (हेमेटाइट) झारखंड के पास है। भारत सरकार के खनन मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट (2017-18) के अनुसार देश के कुल लौह अयस्क का 11 प्रतिशत उत्पादन झारखंड में होता है। लौह अयस्क के उत्पादन में झारखंड का तीसरा स्थान है। झारखंड में इस अयस्क का प्राप्ति क्षेत्र पश्चिमी सिंहभूम जिले के दक्षिणी भाग में है, जो एक लंबी पट्टी के रूप में ओडिशा तक फैला हुआ है। ये नोवामुंडी, गुआ, पनसीराबुरू, बदाम पहाड़, गुरुमहिसानी, किरीबुरू आदि क्षेत्रों में पाए जाते हैं। जबकि मैग्नेटाइट गुमला, हजारीबाग, चतरा, लातेहार, पलामू और पूर्वी सिंहभूम जिलों में प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं।

मैंगनीज

लौह अयस्क के प्रगलन के लिए मैंगनीज एक महत्त्वपूर्ण कच्चा माल है और इसका उपयोग लौह-मिश्रधातु, विनिर्माण में भी किया जाता है। मैंगनीज निक्षेप लगभग सभी भूगर्भिक संरचनाओं में पाया जाता है। हालाँकि मुख्य रूप से यह धारवाड़ क्रम से संबद्ध है। मैंगनीज इस्पात निर्माण, सीसा गलाकर युद्ध सामग्री बनाने तथा विद्युत और रासायनिक उद्योग में प्रयुक्त होता है। झारखंड में यह पूर्वी सिंहभूम एवं पश्चिमी सिंहभूम के चाईबासा, लिमटू, नोआमुंडी, जामदा कौलंदा, बंसाडेरा और बरजमुंडा में मुख्य रूप से पाए जाते हैं। धनबाद, गिरिडीह और हजारीबाग के कुछ क्षेत्रों में इसकी उपलब्धता कम है।

अध्याय 9

औद्योगिक विकास, नीति, विस्थापन एवं पुनर्वास (Industrial Development, Policy, Rehabilitation and Resettlement)

9.1 झारखंड में औद्योगिक विकास *(Industrial Development in Jharkhand)*

झारखंड खनिज संपदा से परिपूर्ण राज्य होने के बावजूद औद्योगिक विकास के संदर्भ में पिछड़ा राज्य रहा है, किंतु सरकार द्वारा किये गए प्रयासों के चलते झारखंड व हर वर्ष औद्योगिक विकास में तीव्र गति से अग्रसर है। राज्य सरकार की नीतियों का ही प्रयास है कि झारखंड राज्यों के व्यापार सुगमता सूचकांक (इज ऑफ डूइंग बिजनेस) में 29वें स्थान से सुधार करते हुए वर्ष 2018 में चौथे स्थान पर पहुँच गया है। औद्योगिक नीति और संवर्धन विभाग (Department of Industrial Policy and Promotion-DIPP) के अनुसार आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और हरियाणा के बाद झारखंड राज्य देश में व्यापार लगाने और चलाने की दृष्टि से अव्वल राज्य है। निवेशकों को झारखंड के प्रति विश्वास पैदा हो रहा है। झारखंड के प्राकृतिक संसाधन, राज्य द्वारा नीतिगत प्रोत्साहन तथा भौगोलिक विशिष्टता राज्य के औद्योगिक विकास के लिये निवेश रास्ता सुलभ करते हैं। ये खनन, धातु निष्कर्षण, इंजीनियरिंग जैसे क्षेत्रों के लिये अनुकूल माहौल उपलब्ध करा रहे हैं। खनिज संपदा की दृष्टि से देश के कुल खनिज का 40% झारखंड में है। यह कोकिंग कोयला, यूरेनियम तथा पाइराइट का एकमात्र उत्पादक है। यह राज्य अपने स्थापना के साथ से ही औद्योगिक विकास के लिये प्रयत्नशील है। वर्ष 2001 में आई औद्योगिक विकास नीति के बाद झारखंड नई औद्योगिक नीति 2012 के तत्पश्चात् झारखंड औद्योगिक और निवेश प्रोत्साहन नीति 2016 लाई गई।

विभिन्न नीतियों एवं प्रयासों के चलते निश्चित ही राज्य का औद्योगिक विकास हुआ है, किंतु अभी भी राज्य के कई क्षेत्रों का औद्योगिक विकास नहीं हो पाया है। सरकार औद्योगिक रूप से पिछड़े क्षेत्रों के विकास के लिये अलग से प्रयास कर रही है। राज्य सरकार द्वारा ऐसे पिछड़े क्षेत्रों में औद्योगिक आधारभूत संरचना का निर्माण आवश्यक है।

राज्य के प्रमुख औद्योगिक क्षेत्रों में जमशेदपुर, धनबाद, बोकारो देवघर, हजारीबाग, सिंहभूम, घाटशिला आदि शामिल हैं। उद्योगों के विकास एवं रोज़गार सृजन के लिये राज्य सरकार झारखंड निवेश संवर्धन बोर्ड, एकल खिड़की निकासी, ऑनलाइन भुगतान, ऑनलाइन सत्यापन, तृतीय पक्ष प्रमाण पत्र, स्व-प्रमाणन, समयबद्ध अनुमोदन, ऑनलाइन जानकारी की उपलब्धता, स्वीकृतियों के लिये मानक संचालन प्रक्रिया, स्वीकृत अनुमोदन, ऑनलाइन जानकारी की उपलब्धता, स्वीकृतियों के लिये मानक संचालन प्रक्रिया, स्वीकृति अनुमोदन आदि की सुविधा विभिन्न विभागों द्वारा उपलब्ध करा रही है।

राज्य ने कृषि आधारित उद्योगों, खाद्य प्रसंस्करण, खनन और खनिज आधारित उद्योगों पर आधारित क्षेत्रों में औद्योगीकरण को बढ़ावा देने के लिये कई पहल की गई हैं। सेरीकल्चर, वन आधारित उद्योग, इंजीनियरिंग और ऑटो उद्योग, रसायन आधारित उद्योग और बिजली उत्पादन से संबंधी उद्योगों को बढ़ावा दिया जा रहा है।

उद्योग, खान और भू-विज्ञान विभाग, औद्योगिक क्षेत्र विकास प्राधिकरण, झारखंड राज्य खादी और ग्रामोद्योग बोर्ड, झारखंड औद्योगिक अवसंरचना विकास निगम, झारखंड खनिज विकास निगम, सिंगल विंडो सोसायटी और झारखंड सिल्क, कपड़ा और हस्तशिल्प विकास निगम राज्य में आधारभूत संरचना के द्वारा उद्योगों के विकास हेतु उद्यमियों को सुविधा प्रदान की जा रही है।

राज्य में आने वाले निवेश प्रस्तावों पर ध्यान दें तो पिछले चार वर्षों में निवेश में वृद्धि हुई है।

वर्ष	झारखंड	भारत	भारत के कुल औद्योगिक निवेश प्रस्ताव में झारखंड का हिस्सा (प्रतिशत में)
2014	₹368 करोड़	₹405027 करोड़	0.09%
2015	₹154 करोड़	₹311031 करोड़	0.05%

अध्याय 10

झारखंड : जनगणना एंव नगरीकरण (Jharkhand : Census and Urbanisation)

वर्ष 2011 की जनगणना देश की 15वीं जनगणना है तथा स्वतंत्र भारत की 7वीं जनगणना है। जनगणना संघ सूची का विषय है। जनगणना प्राचीन काल से होती आ रही है तथा अबुल फजल द्वारा रचित 'आइने अकबरी' में भी जनगणना का उल्लेख किया गया है। ब्रिटिश भारत में 1872 ई. में लॉर्ड मेयो के कार्यकाल में पहली जनगणना हुई तथा 1881 ई. में लॉर्ड रिपन के कार्यकाल में इसने निरंतरता प्राप्त की। भारत सरकार द्वारा इस परंपरा को जारी रखते हुए प्रत्येक 10 वर्ष के अंतराल पर देश में जनगणना कराई जाती है। जनगणना के माध्यम से ही जनसंख्या की आधारभूत विशेषता का आभास तब प्राप्त होता है जब इसका वितरण ग्रामीण एवं नगरीय दो प्रकार से उपलब्ध कराया जाता है। देश के 28वें राज्य के रूप में झारखंड राज्य का गठन नवंबर, 2000 को हुआ। राज्य के गठन के समय इसके ज़िलों की संख्या 18 थी परंतु वर्तमान में यह संख्या 24 हो गई है। राज्य का क्षेत्रफल 79,714 वर्ग कि.मी. है। क्षेत्रफल की दृष्टि से यह भारत का 15वाँ (जम्मू-कश्मीर तथा लद्दाख केंद्रशासित प्रदेशों के निर्माण के पश्चात) राज्य है।

10.1 राज्य की जनसंख्या *(Population of State)*

- 2011 की जनगणना के आधार पर झारखंड राज्य जनसंख्या के मामले में 14वें (तेलंगाना गठन के बाद) स्थान पर है।
- राज्य की कुल जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार- 3,29,88,134
    - पुरुष जनसंख्या - 1,69,30,315
    - स्त्री जनसंख्या- 1,60,57,819
- झारखंड राज्य की जनसंख्या देश की जनसंख्या का 2.72% है जो 2001 के 2.62% से अधिक है।
- राज्य में सर्वाधिक जनसंख्या वाला ज़िला- राँची।
- राज्य में सबसे कम जनसंख्या वाला ज़िला- लोहरदगा

राज्य में सर्वाधिक जनसंख्या वाले ज़िले			राज्य में न्यूनतम जनसंख्या वाले ज़िले		
क्रम संख्या	ज़िले	जनसंख्या	क्रम संख्या	ज़िले	जनसंख्या
1.	राँची	29,14,253	1	लोहरदगा	4,61,790
2.	धनबाद	26,84,487	2.	खुंटी	5,31,885
3.	गिरिडीह	24,45,474	3.	सिमडेगा	5,99,578
4.	पूर्वी सिंहभूम	22,93,919	4.	कोडरमा	7,16,259
5.	बोकारो	20,62,330	5.	लातेहार	7,26,978

राज्य में जनसंख्या की दशकीय वृद्धि *(Decades Growth of Population in State)*

दस वर्षों के अंतराल में राज्य की जनसंख्या में 60,42,305 की वृद्धि के परिणामस्वरूप 2001-2011 के दौरान 22.42% की दशकीय वृद्धि दर दर्ज की गई। यदि 1991-2001 की वृद्धि दर 23.19% की तुलना की जाए तो राज्य में 2001-2011 के दौरान दशकीय वृद्धि में ह्रास स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। राज्य की दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर (22.42%) देश की दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर 17.7% से अधिक है।

- राज्य का सर्वाधिक जनसंख्या वृद्धि दर वाला ज़िला कोडरमा (43.42%) है।
- राज्य का न्यूनतम जनसंख्या वृद्धि दर वाला ज़िला धनबाद (11.99%) है।

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी तथा फ्लोचार्ट का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS

YouTube Drishti IAS

drishtiias

drishtithevisionfoundation